हिन्दुस्तान 1936

आरक्षण और अदालत

न्यायालय ने फिर एक बार आरक्षण की सीमा के प्रति अपना जो फैसला सुनाया है, उस पर बहस ही नहीं, बल्कि राजनीति भी तेज हो सकती है। यह एक बड़ा बदलाव है कि पटना उच्च न्यायालय ने गुरुवार को राज्य में सरकारी नौकरियों और उच्च शिक्षण संस्थानों में पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण सीमा 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 65 प्रतिशत करने की बिहार सरकार की अधिसूचना को रद्द कर दिया है। अदालत ने आरक्षण में वृद्धि की सांविधानिकता को चुनौती देने वाली याचिकाओं की सुनवाई करते हुए यह फैसला सुनाया है। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि राज्य सरकार द्वारा आरक्षण सीमा में की गई वृद्धि उसके विधायी अधिकार से अधिक है। पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के विनोद चंद्रन की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने बिहार सरकार को फिर सोचने और नए कदम उठाने के लिए प्रेरित किया है। अदालत दृढ़ है कि कुल आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

गौरतलब है कि पिछले नवंबर में बिहार सरकार ने दो आरक्षण विधेयकों के लिए एक गजट अधिसूचना जारी की थी। एक अधिसूचना से सरकारी सेवाओं में रिक्तियों को भरने के लिए आरक्षण कोटा को 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 65 प्रतिशत कर दिया गया। ठीक ऐसी ही बढ़ोतरी एससी, एसटी, ईबीसी और ओबीसी के लिए शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए की गई। इसके अलावा, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्ल्यूएस) के लिए अतिरिक्त 10 प्रतिशत आरक्षण को मिला दें, तो बिहार में कुल आरक्षण की सीमा 75 प्रतिशत तक पहुंच जाती। हालांकि, अब बिहार सरकार को परेशानी उठानी पड़ेगी, ज्यादा आरक्षण देने की उसकी कोशिशों पर अंकुश लग गया है। एक छोटी सी जमात ऐसी है, जो आरक्षण या आरक्षण की सीमा बढ़ाने के पक्ष में नहीं है, पर जिस हिसाब से लोगों की महत्वाकांक्षा और जरूरतें बढ़ी हैं, उस हिसाब से आरक्षण की सीमा बढ़ाना ज्यादातर राज्य सरकारों के लिए मजबूरी बनता जा रहा है। अनेक राज्यों में आरक्षण की नई मांग हो रही है। विरोध-प्रदर्शन तक किए जा रहे हैं, अतः आरक्षण की राजनीति करने वालों के लिए यह समय अनुकूल है, पर जरूरत राजनीति से ऊपर उठकर देखने की है।

इंदिरा साहनी बनाम भारत संघ के मामले में 50 प्रतिशत की अधिकतम आरक्षण सीमा तय की गई थी, पर अब उससे आगे बढ़ने की जरूरत है।

दरअसल, आरक्षण के इस पूरे विवाद को विस्तार से समझने और सुलझाने की जरूरत है। न्याय की दहलीज पर आरक्षण के कुछ फैसले बार-बार ठिठक क्यों जाते हैं? बिहार, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में आरक्षण की सीमा बढ़ाने में समस्या है, पर तमिलनाडु में सीमा पार जाकर आरक्षण दिया जा रहा है। आरक्षण जरूर होना चाहिए और उसमें एकरूपता भी होनी चाहिए। राज्यों में बहुत अलग-अलग आरक्षण सीमा उचित नहीं है। जहां तक संविधान में समानता के मौलिक अधिकार के उल्लंघन का प्रश्न है, तो उसे आरक्षण के संदर्भ में नहीं उठाना चाहिए। जहां भी जरूरत है, आरक्षण जरूर मिले, पर उसके नियमों में एकरूपता हो। परिस्थिति विशेष में इंदिरा साहनी बनाम भारत संघ के मामले में 50 प्रतिशत की अधिकतम आरक्षण सीमा तय की गई थी, पर अब उससे आगे बढ़ने की जरूरत है। अगर राज्य सरकारों को आरक्षण बढ़ाने का अधिकार नहीं है, तो केंद्र सरकार ही आगे बढ़कर जरूरी कानूनों में संशोधन करे, ताकि अदालतों में आरक्षण की सीमा पर सवाल की नौबत न आए।

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले 21 जून 1949

चंद्रनगर का निर्णय

ब्रिटिश पराधीनता से मुक्ति के बाद भी हमारे देश की कुछ बस्तियां ऐसी हैं, जिन पर विदेशी राज्य है। इनमें गोवा पुर्तगाल के अधीन है और चंद्रनगर, पाण्डुचेरी, माही, कारीकल व यनाम फांस के। जब तक ये भी विदेशी शासन से मुक्त होकर हमारे साथ न हो जायें, हमें निश्चिन्तता नहीं हो सकती। अतः स्वतंत्रता के बाद ही राजनीतिक रूप से हमारी सरकार ने इनकी मुक्ति के लिए प्रयत्न आरम्भ किया। चंद्रनगर में रविवार १९ जून को हुआ जनमत संग्रह उसी का परिणाम है और यह शुभ शकुन है कि जनमत का निर्णय हमारे अनुकूल हुआ है।

फ्रांस के आधीन पांच बस्तियों में से पाण्डुचेरी, माही, कारीकल और यनाम दक्षिण भारत में हैं तथा पांचवीं चंद्रनगर कलकत्ता के पास। चंद्रनगर कलकत्ता से कोई २२ मील पर है और एक तरह कलकत्ता महानगरी का एक उपनगर ही है। जनसंख्या इसकी लगभग ५०,००० और मतदाताओं की संख्या कोई १२,००० है। क्षेत्रफल इसका लगभग तीन वर्गमील है। सन् १६८८ ई. में फ्रांसीसियों ने इसे जीता था और नेपोलियन कालीन युद्धों के समय अस्थायी रूप से यह कभी अंग्रेजों के और कभी फ्रांसीसियों के आधीन रहा परन्तु १८१६ ई. से इस पर फ्रांस का ही आधिपत्य है। हिन्दुस्तान की आजादी के बाद वस्तु-स्थिति का तकाजा था कि इन छोटी-मोटी बस्तियों पर से भी विदेशी आधिपत्य का अन्त हो जाये। चंद्रनगर के जनमत ने उसका रास्ता बता दिया है और हमें उम्मीद है कि अन्य स्थान भी उसका ही अनुकरण करेंगे।

चंद्रनगर के जनमत के बारे में यह उल्लेखनीय है कि जो तटस्थ निरीक्षक यहां बुलाये गये उन्हें हमारे देश ने मान्यता नहीं दी थी, क्योंकि हमारे देश की पूर्व-स्वीकृति उनके बारे में नहीं ली गई थी; फिर भी यह मानना होगा कि जनमत शान्ति के साथ हुआ है और उससे उस पक्ष का कथन सत्य सिद्ध हुआ है, जो इसे भारत के साथ मिलाने पर जोर देता था। १२००० में से ७६०८ मत पड़ना बताता है कि ५० प्रतिशत से अधिक ने मत दिये और मतदान में केवल ११४ का फ्रांस के पक्ष में तथा ७४७३ का भारत के पक्ष में मत देना इस बात का परिचायक है कि हमारी इन बस्तियों के निवासी भी भारत को ही अपना मातृदेश मानते हैं।

पूरब से पश्चिम तक सबके लिए योग

यहां स्कैन करें

परमहंस योगानंद | प्रसिद्ध योगी और चिंतक

योग कोई धर्म संप्रदाय नहीं है, बल्कि सार्वभौमिक रूप से उपयोगी विज्ञान है। यह समग्र धर्म-दर्शन को व्यावहारिक अनुभव में बदलकर लाभ देता है। योग दिवस विशेष :

योग आत्मा का परमात्मा के साथ पुनर्मिलन करने के लिए वैज्ञानिक विधियों की एक प्रणाली है। हम परमात्मा से यहां आए हैं और हमें उनके पास पुनः जाना है। हमें लगता है कि हम अपने परमपिता से पृथक हो गए हैं और हमें चेतन रूप से उनके साथ पुनः एक होना है। योग हमें इस वियोग के भ्रम से ऊपर उठने और ईश्वर के साथ एकत्व अनुभव करने की विधि सिखाता है।

कवि मिल्टन ने इस विषय पर लिखा था कि कैसे मनुष्य की आत्मा पुनः अपने आनंदधाम को प्राप्त कर सकती है। यही योग का उद्देश्य और लक्ष्य है, आत्मा की चेतना के खोए हुए आनंदधाम को पुनः प्राप्त करना, जिसके द्वारा मनुष्य जानता है कि वह परमात्मा के साथ एक है और सदा एक ही रहा है।

योग सच्चे धर्म का विज्ञान है। विश्व के विभिन्न धर्म न्यूनाधिक रूप से मनुष्य के विश्वासों पर टिके हैं, परंतु धर्म का सच्चा आधार विज्ञान होना चाहिए, ताकि सभी भक्तजन हमारे एकमात्र परमपिता-ईश्वर तक पहुंचने के लिए उसे प्रयोग कर सकें। योग ही वह विज्ञान है। इस धर्म के विज्ञान का अभ्यास अत्यावश्यक है।

विभिन्न हठधर्मी मतों पर आधारित धर्मों ने मानव-जाति को विभाजित करके रखा है, यद्यपि जीसस ने संकेत किया था, 'यदि किसी के घर में फूट पड़ जाए, तो वह घर बस नहीं सकता'। विभिन्न धर्मों में एकता तभी हो सकती है, जब अनेक धर्मों का पालन करने वाले लोग अपने अंतर्वासी ईश्वर से वास्तव में अवगत हो जाएं। तब ईश्वर के पितृत्व की छत्रछाया तले मनुष्य का सच्चा भाईचारा विकसित होगा।

संसार के सभी महान धर्म ईश्वर को पाने की तथा मनुष्यों में आपसी भाईचारे की आवश्यकता का उपदेश देते हैं और सभी की एक नैतिक संहिता है, जैसे कि ईसाई धर्म के दस धर्मादेश, तो फिर पारस्परिक मतभेद कौन पैदा करता है? यह व्यक्तियों के मन का कट्टरपन है। हम धर्म के अंधविश्वासों पर एकाग्रचित होकर नहीं, बल्कि वास्तविक आत्म-ज्ञान द्वारा ईश्वर तक पहुंच सकते हैं। जब व्यक्तियों को विभिन्न धर्मों के मूल में स्थित सार्वजनीन सत्यों का बोध हो जाता है, तब धर्म सिद्धांतों की अधिक कठिनाइयां नहीं होंगी। मेरे लिए कोई यहूदी नहीं है, न कोई ईसाई है और न ही कोई हिंदू है; सब मेरे भाई हैं। मैं सभी मंदिरों में पूजा करता हूं, क्योंकि उनमें से प्रत्येक मेरे परम पिता के सम्मान में बनाया गया है।...

पूर्व एवं पश्चिम वासियों को ईश्वर के घरों में संकीर्ण विभाजनों को सदा के लिए समाप्त कर देना चाहिए। योग द्वारा आत्मानुभूति प्राप्त करते ही सब व्यक्ति यह जान जाएंगे कि वे सब एक ही परमपिता की संतान हैं।

एक अंधा दूसरे अंधे का मार्गदर्शन नहीं कर सकता। परमात्मा का वह एकत्व उन महान पुरुषों में व्यक्त होता है, जिन्होंने आत्मानुभूति प्राप्त कर ली है। केवल एक गुरु (सिद्ध पुरुष), जो ईश्वर को जानता है, दूसरों को सही ढंग से ईश्वर के प्रति शिक्षा दे सकता है। व्यक्ति को अपनी दिव्यता को पुनः पाने के लिए एक ऐसा ही सद्गुरु चाहिए।...

हिंदू गुरुजन शिक्षा देते हैं कि गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपनी दृष्टि सर्वत्र दिव्य नेत्र पर एकाग्र करनी चाहिए। गहनता से मन एकाग्र करते समय योगाभ्यास न करने वाला भी अपने ललाट के भ्रूमध्य बिंदु को सिकोड़ता है और वही गोलाकार दिव्य नेत्र का केंद्र (कूटस्थ) तथा आत्मा के अंतर्ज्ञान का केंद्र भी है। वही वास्तविक 'क्रिस्टल बॉल' है, जिसमें ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए योगी अपनी दृष्टि को एकाग्र करता है। जो अपनी एकाग्रता में पर्याप्त गहराई तक जाते हैं, वे उस 'तीसरे' नेत्र को भेदकर ईश्वर के दर्शन करेंगे। ...योग का अभ्यास अंतर्ज्ञान के दिव्य नेत्र को खोलने में जिज्ञासुओं की सहायता करता है।...

ईश्वर का बोध सर्वप्रथम व्यक्ति को अपने देह-मंदिर में करना चाहिए। प्रत्येक साधक को प्रतिदिन अपने विचारों को अनुशासित करना चाहिए और अपनी भक्ति के वनफूलों को अपनी आत्मा की वेदी पर समर्पित करना चाहिए। जो ईश्वर को अपने अंतर में पा लेगा, वह जिस भी मंदिर अथवा चर्च में प्रवेश करेगा, वही प्रभु की उपस्थिति को अनुभव कर पाएगा।

योग धर्म-दर्शन को व्यावहारिक अनुभव में बदल देता है। योग मनुष्य को सभी धर्मों में सत्य का बोध करने के योग्य बना देता है। ...यदि किसी प्रार्थना को बोलते समय व्यक्ति अपने मन की पृष्ठभूमि में किसी अन्य वस्तु का विचार कर रहा होता है, तो वह प्रार्थना सच्ची नहीं है और ईश्वर उसे अनसुना कर देते हैं। योग सिखाता है कि परमपिता को पाने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि उन्हें पूरे मन के साथ अपनी एकलक्षित एकाग्रता के साथ खोजा जाए।

योग सबके लिए है। कुछ लोग कहते हैं कि योग का अभ्यास करने में हिन्दू ज्यादा अभ्यस्त होते हैं तथा योग पाश्चात्य लोगों के अनुकूल नहीं है। यह सत्य नहीं है। ...योग कोई धर्म संप्रदाय नहीं है, बल्कि एक सार्वभौमिक रूप से उपयोगी विज्ञान है, जिसके द्वारा हम अपने परमपिता को पा सकते हैं। योग प्रत्येक व्यक्ति के लिए है, चाहे वह पश्चिम का हो या पूर्व का। कोई यह नहीं कह सकता कि टेलीफोन पूर्व के लोगों के लिए नहीं है, क्योंकि इसका आविष्कार पश्चिम में हुआ है। इसी प्रकार, योग की प्रविधियां, यद्यपि पूर्व में विकसित हुई हैं, तथापि वे केवल पूर्व के लिए नहीं हैं, बल्कि समस्त मानव-जाति लिए उपयोगी हैं।

कोई व्यक्ति चाहे भारत में पैदा हुआ हो या अमेरिका में, एक दिन उसे मरना ही है। तब संत पॉल की भांति, ईश्वर के ध्यान में 'प्रतिदिन मरना' क्यों न सीखे? योग इसकी विधि सिखाता है।

मनुष्य अपने भौतिक शरीर में एक कैदी की भांति रहता है; जब उसकी अवधि पूरी हो जाती है, वह बाहर निकाल दिए जाने के अपमान को भोगता है। इसलिए देह का मोह, कारागार के मोह से अधिक और कुछ नहीं है। लंबे समय से शरीर में रहने के कारण हम भूल गए हैं कि सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ क्या है। पाश्चात्य होना स्वतंत्रता को न खोजने का कोई बहाना नहीं है। प्रत्येक मनुष्य के लिए यह अति आवश्यक है कि वह अपनी आत्मा को खोजे और अपनी अमर प्रकृति को जाने। योग इसका रास्ता दिखाता है। ...योग सिखाता है कि आत्मा को परमात्मा तक पहुंचने के लिए वापस चेतना की सीढ़ियां अवश्य चढ़नी होंगी।

(विदेश गए शुरुआती योग गुरुओं में शुमार परमहंस योगानंद के 1944 के एक प्रवचन से साभार)

परीक्षाओं को ऐसे बदलिए कि परीक्षार्थियों के साथ न्याय हो

यहां स्कैन करें

अनुराग बेहर | सीईओ, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जैसे कॉलेजों को गुमान है कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं। उनका यह दंभ इसलिए पोषित होता रहा है, क्योंकि उनको 'सर्वश्रेष्ठ' छात्र मिलते हैं। यहां सर्वश्रेष्ठ का खास अर्थ है। ये वैसे छात्र होते हैं, जो कड़ी मेहनत करते हैं, अपने लक्ष्य को लेकर संकल्पित रहते हैं और कुछ खास परीक्षाओं या माहौल के लिए अच्छी तरह अनुकूलित होते हैं। ये तीनों क्षमताएं उन्हें दूसरों से बेहतर बनाती हैं। हालांकि, जीवन के लिए जरूरी क्षमताओं का ये बहुत मामूली हिस्सा होती हैं।

इन कॉलेजों में दाखिला प्रतियोगी परीक्षा के जरिये होता है, जिसमें छात्रों को रैंक दी जाती है, जिसके कारण कुछ हजार परीक्षार्थी प्रवेश पाते हैं और लाखों 'खारिज' कर दिए जाते हैं। हालांकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि जिनको दाखिला नहीं मिला, वे अच्छी शिक्षा के हकदार नहीं हैं। बात सिर्फ इतनी होती है कि इन कॉलेजों के पास पर्याप्त सीटें नहीं हैं। उनके पास सीटें होतीं, तो काफी छात्रों को दाखिला मिल सकता था, क्योंकि तब प्रवेश इस आधार पर मिलता कि छात्रों में उस शैक्षणिक विषय में हिस्सा लेने और उसका लाभ उठाने की जरूरी क्षमता है या नहीं। जाहिर है, अभी जो कथित प्रतियोगी परीक्षाएं हो रही हैं, वे छात्रों को चुनने के बजाय उन्हें छांटने की कवायद अधिक करती हैं। इससे जुड़े तीन और मुद्दे हैं। पहला, इन परीक्षाओं से परीक्षार्थियों में रचनात्मकता, गहरी वैचारिक समझ और उनके प्रयोग जैसी जीवन के लिए जरूरी क्षमताओं का आकलन नहीं किया जा सकता। दूसरा, ये परीक्षाएं परीक्षार्थियों व उनके परिजनों और इस रेस में भाग न लेने वाले छात्रों के बीच सामाजिक, मानसिक और आर्थिक समस्याओं का एक बड़ा कारक बनती हैं और तीसरा, इनमें रैंक योग्यता को प्रतिबिंबित नहीं करते, क्योंकि दोबारा परीक्षा में किसी छात्र की रैंक ऊपर भी उठ सकती है।

अभी जो प्रतियोगी परीक्षाएं हो रही हैं, वे अभ्यर्थियों को चुनने के बजाय उन्हें छांटने की कवायद अधिक करती हैं।

इन सभी समस्याओं को देखते हुए क्या हम चयन का कोई बेहतर तरीका सोच सकते हैं? हमें दरअसल मूल्यांकन के ऐसे तरीके इस्तेमाल करने होंगे, जो क्षमताओं का गहराई से मूल्यांकन कर सके। कुछ बोर्ड परीक्षाओं को बेहतर बनाया भी जा रहा है। इसमें योग्यता का बुनियादी मानक तय किया जा सकता है, जो बताएगा कि छात्र के पास उस शिक्षा कार्यक्रम में शामिल होने व सीखने की कितनी क्षमता है, जिसमें वह दाखिला लेना चाहता है। इन योग्यताओं के साथ पास होने वाले सभी छात्र इन संस्थानों में प्रवेश के लिए पात्र माने जाएंगे। उदाहरण के लिए, इन मानदंडों के तहत चार विषयों में न्यूनतम 70 फीसदी अंक निर्धारित है और यदि 10,000 छात्रों के पास यह योग्यता है, जबकि सीटें सिर्फ 2,000 हैं, तो यादृच्छिक तरीके से, यानी बिना किसी तय मानक के बच्चों का चयन किया जाएगा। ऐसे में, यह संयोग की बात होगी कि किसे कौन सा कॉलेज मिलता है।

सवाल है, इससे हमें क्या हासिल होगा? पहला, यह छात्रों-अभिभावकों पर दबाव कम करेगा। उन्हें केवल 'क्वालिफाइंग' नंबर लाना सुनिश्चित करना होगा, जिसके बाद उनको पता होगा कि सब कुछ संयोग पर निर्भर है। इस तरह, परीक्षा में छंट जाने का कोई दबाव उन पर नहीं रहेगा। इससे उनका मानसिक, सामाजिक और आर्थिक तनाव भी काफी हद तक घट जाएगा। दूसरा, चूंकि इन परीक्षाओं में मौजूदा परीक्षाओं की तरह क्षमताओं के सीमित हिस्से का मूल्यांकन नहीं होगा, इसलिए इससे हमारी शिक्षा को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी, क्योंकि शैक्षणिक उद्देश्यों का संकीर्ण होना कुछ अर्थों में समाज को भी संकीर्ण बनाता है। और तीसरा, इसे लागू करने के बाद कथित सर्वश्रेष्ठ कॉलेजों की पड़ताल इस कसौटी पर होगी कि उनकी शिक्षा वास्तव में कितनी अच्छी है।

निस्संदेह, इससे उस संख्या पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा, जिनको आज कम सीट होने के कारण बढ़िया कॉलेजों में दाखिला नहीं मिल पाता, पर हालात आज से बेहतर होंगे, क्योंकि उन्हें पता होगा कि वे संयोगवश चूक गए, जबकि आज उनके मन में अयोग्य होने संबंधी धारणा घर कर जाती है। वैसे, इस मसले का असली हल तभी संभव है, जब उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण संस्थान पर्याप्त संख्या में खोले जाएं। मगर इसमें वक्त लगेगा, तब तक हमें इन तरीकों की ही पड़ताल करनी चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

संगीत में अध्यात्म

भारतीय संस्कृति में नृत्य, संगीत या अन्य कोई भी काम केवल मनोरंजन की श्रेणी में नहीं आता था, यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया भी थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्वनि, राग व धुन आदि को ऐसे रचा गया है कि अगर आप उनमें पूरी तरह से तल्लीन होना सीख लें, तो ध्यानावस्था को पा सकते हैं। अगर आप शास्त्रीय संगीत में गहराई से जुड़े किसी व्यक्ति को देखें, तो आपको वह किसी संत सा दिखेगा। संगीत ऐसी ध्वनियों का संयोजन मात्र नहीं, जिनका किसी ने आविष्कार किया हो। मनोरंजन जीवन की प्रवृत्ति नहीं थी। सब कुछ चेतना के उच्चतम स्तर तक जाने का साधन मात्र था।

अगर आप किसी चीज से बहुत ज्यादा जुड़ाव महसूस करते हैं, तो आध्यात्मिक प्रक्रिया खुल जाती है। आध्यात्मिक प्रक्रिया क्या है? अगर आप सतह को खरोंचते हैं, तो इसे 'भौतिक' कहा जाता है। अगर आप थोड़ा और गहराई से खरोंचते हैं, तो इसे 'आध्यात्मिक' कहा जाता है। आप संगीत बजा सकते हैं और आध्यात्मिक बन सकते हैं। पर अगर आप बिना किसी भागीदारी के सही संगीत बजाते हैं, तो आप ऐसा नहीं कर सकते। आप पूरी तरह से शामिल हैं, तभी कुछ सार्थक संगीत बना सकते हैं। उस भागीदारी में आपके लिए दरवाजे खुलने चाहिए। कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

एक नया संगीतकार, जिसने अभी-अभी गिटार बजाना सीखा था, संगीत बजाना चाहता था। उसे मंच और श्रोता नहीं मिल रहे थे, पर वह कहीं बजाना चाहता था। उसके इरादे अच्छे थे, इसलिए वह वृद्धाश्रम गया। वहां एक बूढ़ा व्यक्ति बहुत बीमार था और बिस्तर पर पड़ा था। वादक उसके पास जाकर बैठ गया और आधे घंटे तक उसके आगे गिटार बजाया। जब उसे लगा कि उसने पर्याप्त योगदान दे दिया, तो वह उठा और बूढ़े व्यक्ति की ओर देखते हुए कहा, 'आशा है, आप ठीक हो जाएंगे।' बूढ़े व्यक्ति ने उसे इशारे से अपने करीब बुलाया और लगभग फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे आशा है कि तुम भी ठीक हो जाओगे!'

आध्यात्मिक प्रक्रिया जीवन के किसी खास पहलू से जुड़ी नहीं है। या तो हर एक अपने ढंग है या फिर आपके लिए कुछ भी नहीं खुलता। आध्यात्मिक प्रक्रिया ऐसी गतिविधियों हैं, जो बिना भागीदारी के नहीं की जा सकतीं। इसी वजह से उनकी आध्यात्मिक प्रक्रिया के रूप में पहचाना गया है। अन्यथा, इसके लिए किसी चीज की जरूरत नहीं है। अगर आप यहां पूरी तरह से शामिल होकर बैठ सकते हैं, इस हद तक शामिल कि आप हैं ही नहीं; अगर आप जो भी गतिविधि करते हैं, उससे एक खाली द्वार बन जाता है, तो सब कुछ एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, अन्यथा कुछ भी आध्यात्मिक प्रक्रिया नहीं है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्वनि, राग व धुन आदि को ऐसे रचा गया है कि अगर आप उनमें पूरी तरह से तल्लीन होना सीख लें, तो ध्यानावस्था को पा सकते हैं।

सद्गुरु जग्गी वासुदेव

धर्मेंद्र प्रधान | केंद्रीय शिक्षा मंत्री

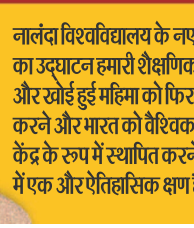

नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन हमारी शैक्षणिक विरासत और खोई हुई महिमा को फिर से हासिल करने और भारत को वैश्विक शिक्षण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक और ऐतिहासिक क्षण है।

परीक्षाओं की शुचिता पर उठते सवाल

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी, यानी एनटीए द्वारा आयोजित यूजीसी-नेट परीक्षा के रद्द होने पर गुस्सा भी है और आश्चर्य भी। किसी भी परीक्षा के लिए एनटीए आमतौर पर जो व्यवस्थाएं करती है, वे काफी सख्त होती हैं। मसलन, अभ्यर्थियों को अपनी कलम तक ले जाने की छूट नहीं होती, मोबाइल तो भूल जाइए। हालांकि, नेट परीक्षा में पारदर्शी कलम ले जाने की अनुमति दी गई थी। मोटे तले वाले जूते पहनने की मनाही की जाती है। घड़ी, टोपी, गमछा और स्कार्फ आदि नहीं पहनना है। बेल्ट और मेटल की कोई वस्तु परीक्षा कक्ष में नहीं ले जा सकते। पानी की बोतल पारदर्शी होनी चाहिए। सभी परीक्षार्थियों की बायोमेट्रिक जांच के उपरांत ही एंट्री होती है। पेपर और ओएमआर शीट का सीरियल मैच किया जाता है। दो-दो बार हस्ताक्षर करने होते हैं। 30 मिनट पहले परीक्षा केंद्र का गेट बंद कर दिया जाता है। प्रश्न-पत्र के पैकेट की सील क्लास में ही काटी जाती है। और, अमूमन दो निरीक्षक परीक्षा भर, यानी तीन घंटे तक लगातार क्लास में घूमते रहते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण है कि इतनी सख्त व्यवस्था के बाद भी परीक्षा का प्रश्न-पत्र लीक हो जाता है। ऐसे में, कुछ सवाल स्वाभाविक ही उठ खड़े होते हैं। क्या अधिकारियों की मिलीभगत के बिना पेपर-लीक संभव है? या प्रश्न-पत्र सुरक्षित रखने की जिनकी जिम्मेदारी है, क्या वहां भ्रष्टाचार नहीं हो रहा है? इनके जवाब चाहे जो भी हों, पर कुव्यवस्था का नतीजा परीक्षार्थी भुगतते हैं। अब हो यह रहा है कि लगभग हर परीक्षा की शुचिता संदेह के घेरे में आ रही है। अगर यही हाल रहा, तो देश के नौजवान निराशा के दौर में चले जाएंगे, जहां से वापस आने में उन्हें वर्षों लग सकते हैं। सरकार को इसका ठोस हल जल्द निकालना चाहिए।

भवतोष पाण्डेय, टिप्पणीकार

घपले की जांच हो

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने नेट परीक्षा आयोजित करने के अगले ही दिन रद्द कर दी। मामले को सीबीआई के हवाले कर दिया गया है। जाहिर है, यह पूरा प्रकरण लाखों विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। मेडिकल परीक्षा (नीट) के बाद अब नेट, दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण परीक्षाएं हैं और दोनों में गड़बड़ी की बात सामने आ रही है। यह मामला बताता है कि एनटीए परीक्षाएं कराने में सक्षम नहीं है। यूजीसी संस्था अच्छी तरह से नेट की परीक्षा आयोजित करती थी और सीबीएसई के पास मेडिकल परीक्षा आयोजित करने का अच्छा अनुभव रहा है। फिर भी, एनटीए को लाया गया। क्यों? क्या यह किसी घपले की ओर इशारा नहीं कर रहा? इसकी पूरी जांच होनी चाहिए।

गंगा सहाय मीणा, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

एनटीए

NATIONAL TESTING AGENCY

गड़बड़ी को दुरुस्त करना ही होगा

सरकार की आलोचना में कुछ लोग इस हद तक उतर आते हैं कि उन्हें सरकार द्वारा किए जाने वाले अच्छे कार्य भी नहीं दिखते। नेट परीक्षा का ही मामला लीजिए। जैसे ही यह पता लगा कि इसमें गड़बड़ी करने का प्रयास किया गया है, तो तत्काल न सिर्फ परीक्षा रद्द कर दी गई, बल्कि मामले को सीबीआई के हवाले भी कर दिया गया, ताकि दोषी किसी मुगालते में न रहें और उनको जल्द से जल्द कानूनी कठघरे में खड़ा किया जा सके। सरकार की तत्परता की तारीफ की जानी चाहिए, लेकिन उल्टे उसी को कठघरे में खड़ा किया जा रहा है।

वास्तव में, पूरा दोष तंत्र का है। तंत्र में इस तरह से घुन लग चुका है कि उसे साफ करने में लंबा वक्त लगेगा। सरकार इसे साफ करने के प्रयास कर भी रही है, जिसके कारण कथित गड़बड़ियों को उजागर कर सरकार को बदनाम किया जा रहा है और उसके कदमों को रोका जा रहा है। एनटीए वास्तव में एक स्वायत्त संस्था है और यह देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश एवं छात्रवृत्ति संबंधी परीक्षाओं का आयोजन करती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रवेश व भर्ती के लिए उम्मीदवारों की योग्यता का आकलन एक कुशल, पारदर्शी व अंतरराष्ट्रीय मानक के आधार पर करना है। दिक्कत यह है कि परीक्षा आयोजित करने की पूरी प्रक्रिया एनटीए खुद नहीं करती। पेपर तो वह खुद बनाती है, लेकिन परीक्षा का आयोजन आउटसोर्स करके किया जाता है। एनटीए का अधिकतर काम टेंडर व्यवस्था के तहत होता है। यही कारण है कि कई टेंडर निकाले जाते हैं और कई कंपनियों को चुना जाता है। ये कंपनियां ही परीक्षा केंद्र का पूरा काम देखती हैं। यहां तक कि स्टाफ भी आउटसोर्स किए जाते हैं। ऐसे में, किसी कंपनी के लापरवाह हो जाने का खतरा बना रहता है, जिसके लिए एनटीए को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। जब इतनी बड़ी संख्या में बच्चे परीक्षा दे रहे हैं, तब कई कंपनियों के साथ सामंजस्य बनाकर ही काम किया जाता है। चूक यहीं पर हो रही है, जिसका नुकसान एनटीए और छात्रों को हो रहा है।

लिहाजा, एनटीए पर उंगली उठाना समस्या का समाधान नहीं है। हमें गड़बड़ी को दुरुस्त करना होगा। इसके लिए व्यापक जांच की जरूरत है और उम्मीद है कि सीबीआई जांच से काफी कुछ स्पष्ट हो सकेगा। हमें यह समझना होगा कि कोई एजेंसी खुद अपने पांव पर क्यों कुल्हाड़ी मारेगी, वह भी एनटीए जैसी, जिसे पता है कि उसके पास कितनी महत्वपूर्ण परीक्षाएं आयोजित करने की जिम्मेदारी है? इसलिए हमें व्यवस्थागत गड़बड़ियों पर ध्यान देना चाहिए।

दीपक, टिप्पणीकार

दैनिक जागरण
योग तन एवं मन में संतुलन का सर्वोत्तम साधन है

एक और परीक्षा से खिलवाड़

मेडिकल कालेजों में प्रवेश की परीक्षा नीट को लेकर उठे गंभीर सवालों के बीच नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए की ओर से कराई गई यूजीसी नेट परीक्षा को रद किया जाना शर्म का विषय है। क्या इससे शर्मनाक और कुछ हो सकता है कि 18 जून को यूजीसी नेट की परीक्षा हुई और 24 घंटे के अंदर खबर आ गई कि उसका प्रश्नपत्र लीक हो गया? यह परीक्षा इसलिए रद करनी पड़ी, क्योंकि उसके प्रश्नपत्र मैसेजिंग एप टेलीग्राम पर उपलब्ध पाए गए। इसका अर्थ है कि एनटीए ने नीट में अनियमितता की शिकायतों से कोई सबक नहीं सीखा। यूजीसी नेट परीक्षा रद करने से तो यह भी संदेह होता है कि एनटीए के तंत्र में ही कुछ ऐसे लोग शामिल हैं, जो धांधली करते अथवा कराते हैं। यह संदेह इसलिए होता है, क्योंकि एक तो इस संस्था के पास पर्याप्त संख्याबल नहीं और दूसरे वह अपना अधिकांश काम ठेके पर कराती है और वह भी ऐसी एजेंसियों के माध्यम से, जिनके पास इस तरह का काम करने का कोई अनुभव नहीं है। समझना कठिन है कि जिन परीक्षाओं में लाखों छात्र बैठते हैं, उनका आयोजन ठेके पर क्यों कराया जाता है? क्या पैसे बचाने के लिए? आखिर लाखों छात्रों के भविष्य से जुड़ा इतना संवेदनशील कार्य ठेके पर कराना कहां की समझदारी है?

इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि यूजीसी नेट परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होने की जांच सीबीआइ को सौंप दी गई है और शीघ्र दोबारा परीक्षा करने का आश्वासन दिया गया है। इस परीक्षा में नौ लाख से अधिक छात्र बैठे थे। आखिर दोबारा परीक्षा देने के लिए विवश हुते अधिक छात्रों के समय और संसाधन की बर्बादी के साथ उन्हें जिस मानसिक पीड़ा का सामना करना पड़ेगा, उसकी भरपाई कौन करेगा और कैसे? एक के बाद एक परीक्षाओं की विश्वसनीयता को लेकर उठने वाले प्रश्न एनटीए के साथ-साथ शिक्षा मंत्रालय और साथ ही केंद्रीय सत्ता की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचा रहे हैं। चूंकि एनटीए की साख ही सवालों से घिर गई है, इसलिए उसकी कार्यप्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। उसकी ओर से आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं को लेकर भरोसा तब बहाल होगा, जब स्वयं उसकी प्रतिष्ठा स्थापित होगी। यह आश्चर्य की बात है कि दर्जनों प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक हो जाने की घटनाओं के बावजूद किसी को यह समझ नहीं आ रहा है कि आखिर प्रश्नपत्रों के कई सेट क्यों नहीं बनाए जा सकते, ताकि यदि कभी एक सेट के प्रश्नपत्र लीक भी हो जाएं तो देश या प्रदेश भर में परीक्षा रद करने की आवश्यकता न पड़े। आज के इस तकनीकी युग में परीक्षा से पहले प्रश्नपत्र छापकर रखने और फिर उन्हें शहर-शहर भेजने की पुरानी व्यवस्था से छुटकारा क्यों नहीं पाया जा सकता? यदि ऐसे प्रश्न अनुत्तरित हैं तो पुरानी भूलों से सबक न लिए जाने के कारण।

सूखे सरोवर

उत्तर प्रदेश में तेजी से नीचे जा रहे भूजल स्तर को ऊपर लाने का एकमात्र उपाय यही है कि तालाबों एवं अन्य जलाशयों में पानी बना रहे। इससे न सिर्फ फसलों की सिंचाई के लिए पानी की कमी का संकट दूर होगा, बल्कि पशु-पक्षियों और जलीय जीवों को भी राहत मिलेगी। इसी उद्देश्य से राज्य में बड़े जोर-शोर से और कई विभागों के सामूहिक प्रयास से अमृत सरोवर योजना की शुरुआत हुई थी। अब हाल यह है कि तालाबों में कहीं भी पानी नहीं दिखाई देता। लोगों के भविष्य और जीवन से जुड़ी कोई योजना यदि अपने उद्देश्य में असफल रहती है तो उस पर किया गया पूरा खर्च निरर्थक है। विडंबना यह है कि गांव के लोगों ने भी इस योजना का महत्व नहीं समझा, जिनका पूरा जीवन ही तालाबों के पानी पर निर्भर है, चाहे वह खेती के लिए हो या फिर पशुओं का पालन। अमृत सरोवर एकमात्र ऐसी योजना है जो गांवों में जल संकट दूर कर सकती है लेकिन ग्राम पंचायतें ही इसको लेकर उदासीन बनी रहीं, जबकि अधिकांश स्थानों पर इनके संचालन की जिम्मेदारी उन्हीं की थी। केंद्र सरकार ने अमृत सरोवर योजना 2022 में शुरू की थी और अगस्त 23 में यह पूरे देश में समाप्त हो गई, लेकिन इसके बहुउद्देश्यीय महत्व को देखते हुए राज्य सरकार ने इसे इस साल 15 अगस्त तक चलाने का निर्णय लिया है। इसके तहत प्रदेश में 16,909 सरोवर या तो निर्मित किए गए या पुराने तालाबों का जीर्णोद्धार किया गया, जो कि देश में सर्वाधिक है, लेकिन ऐसे तालाबों का उपयोग ही क्या जिनमें पानी न हो। ग्रामीणों को भी जागरूकता का परिचय देते हुए दबाव बनाना चाहिए, क्योंकि यह सीधे तौर पर उनके हितों से जुड़ा है।

> अमृत सरोवर एकमात्र ऐसी योजना है जो गांवों में जल संकट दूर कर सकती है, लेकिन ग्राम पंचायतें ही इसको लेकर उदासीन बन रहीं

यूरोप की जरूरत बना भारत

शिवकांत शर्मा

जी-7 देशों ने भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारे के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने का वादा कर भारत को प्राथमिकता देने के ही संकेत दिए

कहते हैं कि एक तस्वीर हजार शब्दों के बराबर होती है। बीते दिनों इटली में आयोजित जी-7 शिखर बैठक की सामूहिक तस्वीर पर यही बात लागू होती है। भारत इस समूह का सदस्य नहीं है, फिर भी विश्व की सात बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के इस समूह की शिखर बैठकों में 2019 के बाद से भारत को हर साल आमंत्रित किया जाता है। यह वैश्विक मंच पर उसके बढ़ते कूटनीतिक एवं आर्थिक कद का प्रतीक है। जी-7 की अध्यक्ष और शिखर बैठक की मेजबान इटली की प्रधानमंत्री जार्जिया मेलोनी ने भारत के अलावा ब्राजील, सऊदी अरब, तुर्की और यूएई जैसे 11 अन्य देशों को भी बुलाया। भारत के प्रधानमंत्री मोदी को जिस तरह नेताओं की पंक्ति के एकदम बीच में जी-7 के प्रतीक चिह्न के सामने स्थान दिया गया, वह शिखर बैठक में शामिल अन्य देशों की तुलना में भारत की मजबूत आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को भी रेखांकित करता है।

अमेरिका के अलावा जी-7 के सभी देश आर्थिक विकास की धीमी रफ्तार से जूझ रहे हैं। 2008 में आई विश्वव्यापी मंदी के समय तक अमेरिका और यूरोप की आर्थिकी लगभग बराबर थीं, मगर उसके बाद से अमेरिकी अर्थव्यवस्था यूरोप से लगभग दोगुनी हो चुकी है। भारतीय अर्थव्यवस्था तब से करीब 3.5 गुना बढ़ी है। जबकि यूरोप की अर्थव्यवस्था 30 देशों के विभिन्न कानूनों और लालफीताशाही में उलझी रही। इसके चलते यूरोप प्रति व्यक्ति आय में भी अमेरिका से 25 प्रतिशत पिछड़ गया। बुजुर्ग होती आबादी की देखभाल में बढ़ते खर्च से सरकारों के बजट बिगड़ रहे हैं। कृषि सब्सिडी, श्रम सुधार और सेवा क्षेत्र में प्रवेश जैसी शर्तों पर अड़ियल रवैये के कारण भारत जैसे तेज आर्थिक रफ्तार वाले देशों के साथ भी मुक्त व्यापार समझौते नहीं हो पा रहे। जबकि भारत ने नार्वे, स्विट्जरलैंड, आइसलैंड और लिष्टेंस्टाइन के साथ मुक्त व्यापार समझौता किया है। ये देश यूरोपीय संघ का हिस्सा नहीं हैं।

यूरोप में लोग करों के बढ़ते बोझ और महंगाई से भी परेशान हैं। शरणार्थी और अप्रवासी उनके रोष का निशाना बन रहे हैं। सीरियाई गृहयुद्ध के बाद 2015 में यूरोप को दूसरे विश्व युद्ध के बाद के सबसे गंभीर शरणार्थी संकट का सामना करना पड़ा। सीरिया, कोसोवो, अफगानिस्तान, इराक, पाकिस्तान और लीबिया जैसे देशों के 13 लाख से अधिक शरणार्थी यूरोपीय देशों की सीमाओं पर जमा हो गए। अधिकांश देशों ने उन्हें शरण देने से मना कर दिया। अंत में अधिकांश लोगों को जर्मनी ने शरण दी, जिसके फलस्वरूप उसकी मुस्लिम आबादी 46 लाख का आंकड़ा पार कर कुल जनसंख्या का लगभग छह प्रतिशत हो चुकी है। फ्रांस में भी मुस्लिम आबादी बढ़कर 10 प्रतिशत हो गई है और वह यूरोप का सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश बन गया है। कड़े सीमा नियंत्रण के बावजूद ब्रिटेन में मुस्लिम आबादी 6.5 प्रतिशत को पार कर गई। इसके चलते यूरोप के कई शहरों में वहां के मूल निवासी अल्पसंख्या में आ गए। इस कारण भी स्थानीय लोगों में रोष पनपने लगा। यही इन दिनों यूरोप में चल रही अप्रवास विरोधी लहर का प्रमुख कारण बना, जिसके चलते ब्रिटेन को यूरोपीय संघ की सदस्यता छोड़नी पड़ी और पिछले सप्ताह यूरोपीय संसद के चुनावों में फ्रांस और जर्मनी जैसे प्रमुख देशों में सत्ताधारी उदारवादी पार्टियों को अप्रवास विरोधी दक्षिणपंथी पार्टियों के हाथों पराजय का मुंह देखना पड़ा।

अवधेश राजपूत

फ्रांस में राष्ट्रपति मैक्रों की रेनेसां पार्टी को यूरोपीय संसदीय चुनावों में अप्रवास विरोधी दक्षिणपंथी नेशनल रैली पार्टी से आधे वोट भी नहीं मिले। इसलिए उन्होंने अविश्वास प्रस्तावों से बनने वाले दबाव की प्रतीक्षा न करते हुए संसद को भंग कर दिया और मध्यावधि चुनाव की घोषणा कर डाली, जो 30 जून को होगा। इस चुनाव में मैक्रों की गठबंधन सरकार की हार लगभग तय मानी जा रही है। यदि ऐसा होता है तो वह नाम मात्र के राष्ट्रपति रह जाएंगे, क्योंकि दक्षिणपंथी नेशनल रैली उनकी घरेलू एवं विदेश नीतियों का विरोध करती है। इसी तरह यूरोपीय चुनावों में जर्मनी के चांसलर ओलाफ शुल्ज के डेमोक्रेटिक गठबंधन को इतनी बुरी हार हुई कि वह तीसरे स्थान पर चला गया। शुल्ज ने संसद भंग करके चुनाव की घोषणा तो नहीं की, लेकिन उनके लिए भी शेष डेढ़ वर्ष के कार्यकाल में अपनी सरकार चला पाना कठिन लग रहा है। ब्रिटेन में चार जुलाई को होने जा रहे आम चुनाव में प्रधानमंत्री सुनक की कंजरवेटिव पार्टी की हालत इतनी पतली है कि एक सर्वेक्षण में तो उसके तीसरे स्थान पर खिसकने के आसार बताए गए हैं।

अमेरिका में अर्थव्यवस्था की स्थिति बढ़िया होने के बावजूद राष्ट्रपति बाइडन का चुनाव जीत पाना कठिन है, क्योंकि अदालतों में दौड़ी पाए जाने के बाद भी ट्रंप की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। कनाडा में प्रधानमंत्री ट्रूडो के गिरते जनसमर्थन को देखते हुए उनकी सरकार का अगले साल तक चल पाना कठिन है। यही हाल जापान में प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा की गठबंधन सरकार का है। कुल मिलाकर जी-7 के सातों नेताओं में से केवल मेजबान इतालवी प्रधानमंत्री मेलोनी का राजनीतिक आधार ही मजबूत है, क्योंकि यूरोपीय चुनावों में उनके गठबंधन की शानदार जीत हुई है। आमंत्रित देशों में भारत के प्रधानमंत्री मोदी अपनी पार्टी का बहुमत खो देने के कारण राजनीतिक रूप से कुछ कमजोर अवश्य पड़े हैं, परंतु उनके गठबंधन के पास पर्याप्त बहुमत है और अर्थव्यवस्था की रफ्तार दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज है। मेलोनी के साथ उनके संबंध भी मधुर हैं।

चीन से पिछड़कर यूरोप अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रह गया है। इसलिए उसे अपनी विकास दर की रफ्तार बढ़ाने की जरूरत है। भारत को भी अपना माल बेचने के लिए यूरोप जैसे विशाल एवं विकसित बाजार की दरकार है, क्योंकि कोई देश विदेश में माल बेचकर धन कमाए बिना अपने लोगों का जीवनस्तर ऊपर नहीं उठा पाया है। इसलिए भारत को यूरोप के साथ मुक्त व्यापार समझौते की कोशिश करनी चाहिए, जिसकी यूरोप और भारत दोनों को जरूरत है। जी-7 देशों ने भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारे के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने और हिंद प्रशांत क्षेत्र की आर्थिक सुरक्षा का संकल्प दोहरा कर इस दिशा में आगे बढ़ने का संकेत दिया।

(लेखक बीबीसी हिंदी के पूर्व संपादक हैं)

response@jagran.com

जीवन को पूर्णता प्रदान करता है योग

गिरीश्वर मिश्र

वैसे तो आसन और प्राणायाम शारीरिक अभ्यास हैं, किंतु इनका उतना ही आध्यात्मिक महत्व भी है

यदि योग की गंभीरता से अपना लिया जाए तो वह व्यक्ति का सबसे अच्छा और भरोसेमंद सहायक साबित होता है। यह अपने साधकों को दुख और क्लेश से मुक्त कराता है और सुखपूर्वक समग्रता या पूर्णता में जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। वेदों से निकला हुआ 'योग' शाब्दिक रूप से 'जुड़ने' के अर्थ को व्यक्त करता है। अनुमानतः लगभग 200 वर्ष ईसा पूर्व महर्षि पतंजलि ने 'योग सूत्र' में प्राचीन ज्ञान को वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित कर लोक-कल्याण के लिए प्रस्तुत किया। इसका उद्देश्य था मन में उठने वाली उथल-पुथल को रोकने, दैनिक जीवन में शांति स्थापित करने और अंततः आत्मा और ब्रह्म का संयोग कराने के लिए मार्ग दिखाना। एक अध्ययन-विषय के रूप में योग भारतीय दर्शनों में से एक है।

प्रायः सभी भारतीय दर्शन उस सर्वव्यापी परम तत्व को स्वीकार करते हैं, जो सभी विद्यमान वस्तुओं में उपस्थित है। व्यक्ति और उस परम सत्ता में एकात्मता होती है। योग मार्ग वह पाठ है, जो व्यक्ति-चैतन्य को विकसित और समृद्ध करता है, ताकि जीवन में अधिक सामंजस्य का अनुभव शामिल हो सके और अंततः परम तत्व के साथ एकता का अनुभव हो सके। जैसा कि उपनिषदों में वर्णित है, हमारा अस्तित्व पांच तत्वों से बनी रचना है। इस रचना में शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आनंद के पांच क्रमिक स्तर पहचाने गए हैं। योग का अभ्यास इन तत्वों के बीच पारस्परिक संतुलन और चैतन्य लाता है और अस्तित्व के केंद्र परम तत्व की ओर अग्रसर करता है। योग बाह्य से आंतरिक बुद्धि और आंतरिक से बाह्य बुद्धि की यात्रा है।

योग-सूत्र अष्टांग योग के नाम से प्रसिद्ध है। इसके आठ अंग हैं-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। साधक को इन पर साथ-साथ समानांतर रूप से चलना चाहिए। योगाभ्यास का उद्देश्य साधक को आत्मावलोकन-अपने विचारों और व्यवहारों और उनके परिणामों को देखना-समझना भी होता है। यम और नियम नामक पहले दो चरण नैतिकता और सदाचारपूर्वक जीवन जीने के लिए निर्देश देते हैं। जहां यम बाहरी दुनिया के साथ संबंध पर केंद्रित हैं, वहीं नियम निजी आध्यात्मिक विकास और आत्मानुशासन की आदतों को बताते हैं। यम पांच हैं-अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (इंद्रियसुख का नियंत्रण) और अपरिग्रह (वस्तुओं का अतिसंचय/संग्रह)। यम वस्तुतः प्रतिबंध हैं, जो निम्न कर्म के स्तर पर ही नहीं, बल्कि विचार और शब्द के स्तर पर भी लागू होते हैं। इन्हें अपनाने पर योगाभ्यासी व्यक्ति को स्वतंत्रता मिलती है और खुली सांस लेने का अवसर मिलता है। इनके अतिरिक्त पांच नियम हैं, जो वस्तुतः सदाचार के पालन पर बल देते हैं। ये हैं-शौच (पवित्रता), संतोष, तप (इच्छाओं का शमन), स्वाध्याय (आध्यात्मिक ग्रंथों तथा स्वयं का अध्ययन) और ईश्वर-प्रणिधान (परमेश्वर की आत्मार्पण)। इस तरह यम और नियम योग पथ के राही के लिए कर्तव्य और अकर्तव्य की व्याख्या करते हैं। ये आत्म शोधन का भी काम करते हैं और अच्छे तथा सुखी जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये नींव रखने का काम करते हैं।

तेजी से लोकप्रिय हो रहा है योग। प्रेट्र

आसन और प्राणायाम शारीरिक अभ्यास हैं, पर इनका आध्यात्मिक महत्व भी है। आध्यात्मिक विकास की ओर उन्मुख जीवन के लिए औजार भी ठीक होना चाहिए। राह मालूम हो, लक्ष्य भी ज्ञात हो, पर चालक ठीक है या नहीं, यह भी देखना होता है। सौद्देश्य जीवन के लिए शरीर ठीक रखना जरूरी है। यह पवित्र कर्तव्य बनता है कि शरीर को स्वस्थ रखा जाए। प्राणायाम से प्राण ऊर्जा का संचरण शरीर में स्वेच्छा से होता है, सिद्धियां भी आती हैं और मन की स्थिरता भी। वस्तुतः प्राणायाम और प्रत्याहार, दोनों ही आंतरिक दुनिया की ओर उन्मुख होते हैं और इस अर्थ में पहले के तीन चरणों-यम, नियम और आसान से भिन्न होते हैं। प्राणायाम का अभ्यास लयात्मक श्वास द्वारा इंद्रियों के अंदर की ओर खींचने की दिशा में चेतना को ले चलना, अंदर के अध्यात्म के गहन अनुभव की ओर अग्रसर करना संभव हो पाता है। पहले के पांच चरण बाद के तीन चरणों के लिए उर्वर आधार भूमि का निर्माण करते हैं। धारणा योग का छठा चरण है। इसके अंतर्गत साधक अपने अवधान की एकाग्रता एक दिशा में और लंबे समय तक बनाए रखता है। यह परम तत्व पर ध्यान केंद्रित करने की तैयारी है। बिना किसी व्यवधान के निर्बाध ध्यान करना साधक को सहकार का अवसर देता है। साधक का समग्र अस्तित्व-शरीर, श्वास, इंद्रियां, मन, बुद्धि और अहंकार, ध्यान की वस्तु-सभी परम तत्व के साथ एकीकृत हो जाते हैं। इस यात्रा का अंतिम पड़ाव समाधि है, जिसमें परम तत्व के साथ एकाकार होना होता है। तब अलगाव का भ्रम दूर हो जाता है और आनंद के साथ परम चेतना के साथ एकत्व का अनुभव होता है।

भारत में योग के ऊपर अध्ययन-अनुसंधान लगभग एक सदी से हो रहे हैं। पश्चिमी देशों में योग की लोकप्रियता बढ़ने के साथ मनोचिकित्सा के रूप में इसके वैज्ञानिक शोध का तेजी से प्रचलन हुआ है। अब अनेक मानसिक, सांवेगिक और शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं जैसे अवसाद, पाचन क्रिया से जुड़े रोग, हृदय रोग, अस्थमा, मधुमेह और कैंसर आदि पर योग-अभ्यास के प्रभाव जांचे समझे जा रहे हैं। योगाभ्यास करने वाले प्रायः शरीर में विश्राम, मन में एकाग्रता और हृदय में शांति का अनुभव करते हैं। मनुष्य स्वभाव से अपूर्ण होता है, परंतु योग उसे पूर्ण बनाता है। फिर वह स्वयं को खोज लेता है। स्वयं अपने भीतर और सारे जगत में दिव्यता का दर्शन करने लगता है। यही योग का अभीष्ट है। योग की लोकप्रियता बढ़ रही है तो इसीलिए कि वह विश्व को भारत की ओर से दी जाने वाली एक अनूठी सौगात है।

(लेखक शिक्षाविद् एवं पूर्व कुलपति हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आनंदमय जीवन

योग की धारा प्राचीन काल से अब तक योगियों के हृदय में पवित्र मंदाकिनी के अविरल प्रवाह की तरह प्रवाहित होती आ रही है। संपूर्ण विश्व का चिकित्सा जगत ऋषियों की इस योग विद्या पर अनुसंधान करके लाभान्वित हो रहा है।

योग से मनुष्य शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक ऊर्जा को प्राप्त करता है। इससे शरीर तथा मन की शुद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। योग के मार्ग पर निरंतर चलने से ही जीवात्मा सत्, चित्, आनंद स्वरूप ब्रह्म का साक्षात्कार करने में समर्थ बनता है। योग दर्शन में वर्णित योग के अंगों का श्रद्धापूर्वक पालन करने से जीवन में आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति होती है। योग आनंदमय जीवन जीने की कला है। योग से ही जीवन में कुशलतापूर्वक कर्म करने की योग्यता प्राप्त होती है। कर्मों की कुशलता का तात्पर्य है कर्मों का संपादन इस प्रकार से करना कि जो हमारे बंधन का कारण न बनें। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की विकृत जीवनशैली से लगभग सभी लोगों का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी विकृत हो गया है। इसके कारण लोग तनाव, चिंता, अवसाद से तथा अनेक प्रकार की शारीरिक-मानसिक व्याधियों से ग्रस्त हैं। इस आधुनिक जीवन में योग का अनुकरण हमारे शरीर तथा मन को संतुलित तथा संयमित बनाकर सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

मानव शरीर को धर्म के कार्य करने का प्रधान साधन माना गया है। इसी शरीर में दिव्य तत्व आत्मा का भी निवास स्थान है। इसलिए हमारे ग्रंथों में मानव शरीर को यज्ञ कर्म करने की दिव्य नौका माना गया है। योग शरीर रूपी इस दिव्य नाव को नई स्फूर्ति तथा ऊर्जा से परिपूर्ण करता है। योग से ही मानसिक एकाग्रता प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य साधना के मार्ग पर आगे बढ़ता है। ब्रह्मांड के कण-कण में विराजमान ईश्वर के आनंद की अनुभूति करने में समर्थ बनाता है।

आचार्य दीप चंद भारद्वाज

खाद उत्पादन में आत्मनिर्भर बने भारत

रंजना मिश्रा

नैनो यूरिया फसल उत्पादन बढ़ाने, कृषि लागत कम करने और पर्यावरण की रक्षा करने में मदद कर सकता है

भारत का लक्ष्य 2025 के अंत तक यूरिया उत्पादन में पूरी तरह से आत्मनिर्भर बनना है। इसीलिए देश अपना घरेलू उत्पादन बढ़ा रहा है। इस कारण यूरिया की मांग और घरेलू उत्पादन के बीच का अंतर अब कम हो रहा है। भारत ने इस बार करीब 75.8 लाख टन यूरिया का आयात किया है, जो पिछले साल के 91.36 लाख टन से कम है। यूरिया उत्पादन की क्षमता बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए सरकार ने दुनिया का पहला तरल नैनो यूरिया विकसित किया है। नैनो यूरिया कृषि में क्रांति लाने की क्षमता रखता है।

नैनो यूरिया पारंपरिक यूरिया की तुलना में कई फायदे प्रदान करता है। यह नैनो-प्रौद्योगिकी का उपयोग करके बनाए गए यूरिया का एक तरल रूप है, जिसमें यूरिया के कण सामान्य यूरिया की तुलना में बहुत छोटे होते हैं। नैनो यूरिया के कई फायदे हैं। इसके छोटे कण फसलों की पत्तियों और जड़ों द्वारा आसानी से अवशोषित कर लिए जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पौधों को अधिक पोषक तत्व मिलते हैं। इससे पोषक तत्वों का नुकसान कम होता है। नैनो यूरिया के मिट्टी में घुलने की आशंका भी कम होती है। जिससे इसके उपयोग से फसल उत्पादन में 10-20 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। नैनो यूरिया के उपयोग से पानी और उर्वरक की भी बचत होती है। ऐसे में इसका उपयोग मिट्टी की सेहत में सुधार कर सकता है। नैनो यूरिया मिट्टी के सूक्ष्मजीवों के लिए हानिकारक नहीं होता है। यह मिट्टी की उर्वरता और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है।

यूरिया आयात पर अत्यधिक निर्भरता, देश के लिए कई समस्याएं उत्पन्न कर रही है। आयातित यूरिया महंगा होता है, जिससे किसानों पर बोझ बढ़ जाता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। वैश्विक कीमतों में उतार-चढ़ाव घरेलू यूरिया की कीमतों को अस्थिर करते हैं, जिससे किसानों को नुकसान होता है। आयात में कमी खाद्य उत्पादन को प्रभावित करती है, जिससे खाद्य सुरक्षा को खतरा होता है। दरअसल भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी का मुख्य आधार कृषि है और उर्वरकों की आपूर्ति में कमी से देश के ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र आर्थिक प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यूरिया उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने से इन चुनौतियों का समाधान हो सकता है। यूरिया के घरेलू उत्पादन से कीमतें कम होंगी और किसानों को लाभ होगा। आयात पर निर्भरता कम होने से कीमतें स्थिर होंगी, जिससे किसानों को बेहतर योजना बनाने में मदद मिलेगी। यूरिया का घरेलू उत्पादन खाद्य उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करेगा, जिससे खाद्य सुरक्षा मजबूत होगी। आत्मनिर्भरता किसानों को उर्वरक उपयोग के प्रति अधिक जागरूक बनाएगी, जिससे पर्यावरण प्रदूषण कम होगा।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

क्या सबक लेंगे दलबदलू

'दलबदलुओं के लिए कठिन होती राह' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में डा. जगदीप सिंह ने दलबदलुओं को यह समझाने की कोशिश की है कि उनका मौसम की तरह दल बदलना लोकतंत्र के साथ उनके राजनीतिक करियर के लिए भी नुकसानदेह है। वहीं, भाजपा को भी इस बात पर मंथन करना चाहिए कि उसे अबकी बार कम सीटें मिलने की वजह पार्टी में दलबदलुओं को जगह देना तो नहीं है? अब दलबदलू नेताओं से आमजन का मोहभंग हो रहा है, क्योंकि लोगों को ऐसा लगता है कि कुछ नेता जिधर की हवा चलती है, उधर के हो लेते हैं। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने अपनी किताब 'पाथवेज टु रेटनेस' में लिखा है कि 'नेताओं को देश के लिए एक दृष्टिकोण अपनाकर और विकासात्मक राजनीति का हिस्सा बनकर सभ्य समाज के लिए उदाहरण पेश करना चाहिए।' अफसोस की बात है कि आज हमारे देश में बहुत से नेता हर बात और काम पर राजनीति करने का बहाना खोजते रहते हैं। हमारे देश की राजनीति से अब विचारों के साथ देश के विकास के मुद्दे भी गायब हो गए हैं। कोई भी राजनीतिक दल बुरा नहीं होता, लेकिन जब किसी दल में स्वार्थी लोग शामिल हो जाते हैं तो वे उसकी छवि को धूमिल करते ही हैं, साथ ही लोकतंत्र को भी कमजोर करते हैं। लोकतंत्र में जब हाईकमान की नीतियां गलत लगें तो विरोधस्वरूप कोई भी नेता पार्टी बदलने में पूर्ण रूप से स्वतंत्र है, लेकिन जब कोई वर्षों तक पार्टी में रहा हो और पार्टी का खास चेहरा रहा हो वह केवल सत्ता के लोभ में उसे छोड़ दे तो ठीक नहीं कहा जाएगा।

raju09023693142@gmail.com

मेलबाक्स

हमारे देश की राजनीति अवसरवाद का शिकार हो चुकी है। अब यह देखना होगा कि मतदाताओं ने जो इस बार के आम चुनाव में दलबदलुओं को नकारा है, उससे दलबदलू और राजनीतिक दल कितना सबक लेते हैं।

गर्व का क्षण

बचपन में कभी गीत सुना था जिसमें एक पंक्ति थी 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, यह मंत्र विश्व में छाएगा। तक्षशिला, नालंदा का इतिहास लौटकर आएगा।'' विश्वविख्यात नालंदा विश्वविद्यालय को एक अज्ञानी आक्रमणकारी ने जलाकर नष्ट कर दिया था। कहते हैं वहां इतनी संख्या में किताबें थीं कि महीनों तक आग जलती ही रही। बचपन के उस दौर में सपना तो देखा था कि एक दिन नालंदा विश्वविद्यालय अपने पुराने वैभव को प्राप्त होगा। आज जब प्राचीन विश्वविद्यालय के अवशेष के समीप नवीन नालंदा विश्वविद्यालय राष्ट्र को समर्पित किया गया तो वह सपना सच होता लगा। नालंदा विश्वविद्यालय समूचे विश्व के समक्ष इस बात का प्रमाण है कि भारत अपनी प्राचीन संस्कृति एवं ज्ञान को नवीन ऊर्जा के साथ समावेशित कर विश्व कल्याण के लिए उठ खड़ा हुआ है। हमारा वैभव हमारा गौरव लौट आया है।

arjitmishra@yahoo.com

विपक्ष समझे अपनी भूमिका

भारत को अपने नापाक पड़ोसियों को सबक सिखाने और देश एक नई पहचान देने के लिए सत्ता और विपक्ष को बिना वजह के अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर राजनीति करने से बचना चाहिए, लेकिन ऐसा करेगा कौन? राजग जिन दलों से मिलकर बना है वे तो फिर भी प्रधानमंत्री मोदी के फैसलों पर सहमति जता देंगे, लेकिन विपक्ष ऐसा करेगा लगता नहीं? राहुल गांधी सर्जिकल स्ट्राइक और चीन आदि पर की गई कार्रवाई पर सवाल खड़े कर चुके हैं। लोकतंत्र की मजबूती के लिए जितनी अहम भूमिका लोगों द्वारा चुनी सरकार की होती है, उतनी ही मजबूत विपक्ष की भी होती है, लेकिन विपक्ष भी तभी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जब उसमें सुलझे लोग हों। ऐसे जो देश और आमजन के आधार से जुड़े मुद्दों पर सरकार को घेरें, न कि बिना किसी आधार के ही प्रधानमंत्री को घेरें। अर्थात गलती के लिए सरकार की खुल के आलोचना करें तथा उचित कार्य के लिए सरकार का सहयोग दें। संसद देशहित और जनहित के लिए फैसले लें, न कि बिना वजह हो-हल्ला कर संसद का समय बर्बाद करें

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -'विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*'
दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय: 011-43166300, नोएडा कार्यालय: 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****